

२५/५/२५ पत्रावली पेश हुई करीब ७:३० उपा  
 सुतपाद करीब पत्रावली दिनांक ७/५/२५  
 को पेश है

उपा  
 सुतपाद करीब

७/५/२५ पत्रावली पेश हुई करीब ७:३० उपा  
 सुतपाद करीब पत्रावली दिनांक  
 २२/५/२५ को पेश है

उपा  
 सुतपाद करीब

२२/५/२५ पत्रावली पेश हुई करीब ७:३० उपा व अउपा वी. ② ③ ④ ⑤ ⑥ ⑦ ⑧ ⑨ ⑩ ⑪ ⑫ ⑬ ⑭ ⑮ ⑯ ⑰ ⑱ ⑲ ⑳ ㉑ ㉒ ㉓ ㉔ ㉕ ㉖ ㉗ ㉘ ㉙ ㉚ ㉛ ㉜ ㉝ ㉞ ㉟ ㊱ ㊲ ㊳ ㊴ ㊵ ㊶ ㊷ ㊸ ㊹ ㊺ ㊻ ㊼ ㊽ ㊾ ㊿ १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

कहा जा रहा है कि उभयपक्षों की शिकायतें  
 एक दूसरे के उपरान्त हो पा रही हैं कि शर्तों व अउपा  
 वास्तविक रूप में ही लागू हो रहे हैं एवं विवादों को  
 का वैधानिक विचार नहीं हुआ है।

उत्तर: वाद की प्रकृति को रोकने व वाद की विषय-वास्तु को कारण बनने के लिए जा. पत्र के अंत में उल्लेखित शर्तों पर उभयपक्षों को तार्किकतावाद में ही विचार करना बनाने रखने हेतु पाठ्य किताब पेश है।

पत्रावली अंत  
 शंकर दोन दर्ज नम्बर से कर है  
 उपखण्ड अ  
 उपखण्ड, याजपुर (३)